जलोदीप

नाटककार गजेन्द्र ठाकुरक जन्म भागलपुरमे सन् १९७१ मे भेलन्हि आ आइ काल्हि ओ दिल्लीमे रहै छथि।

जलोदीप

गजेन्द्र ठाकुर

श्रुति प्रकाशन, नई दिल्ली

Jalodeep: A collection of Children Maithili Dramas by Gajendra Thakur first published in 2012 by M/s Shruti Publications, India
Price: Rs.100

पहिल संस्करण : 2012
ISBN : 978-93-80538-53-2

श्रुति प्रकाशन :रजिस्टर्ड ऑफिस: ८/२१, भूतल, न्यू राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली-११०००८.दूरभाष-(०११) २५८८९६५६-५८ फैक्स (०११)२५८८९६५७

Website:http://www.shruti-publication.com

e-mail: shruti.publication@shruti-publication.com

Printed at: Ajay Arts, Delhi-110002

Distributor : Pallavi Distributors, Ward no- 6, Nirmali (Supaul), मो.- 957245.4.5, 9931654742

Jalodeep: A collection of Children Maithili Dramas by Gajendra Thakur

अनुक्रम

भऽ जाएब छू

(बाल चौबटिया-सड़क नाटक)

सूत्रधार: आउ, आउ। ऐ चौबटिया नाटक, सड़क नाटक देखबाले आउ।

(सूत्रधार लोक सभ दिस तकै छथि।| हमर कलाकार सभ गप-शप करैत हल्ला जेकाँ करैत छथि।)

भीड़सँ आएल पुरुष कलाकार: (कलाकार सभक गोलसँ बहार भऽ निकलैत)- की हौ। की सभ बाजि रहल छह हौ। की छिऐ ?

सूत्रधार: सभ जुमि कऽ आउ। घेराबा बना लिअ। मैथिली चौबटिया नाटकले घेरा बना कऽ ठाढ़ भऽ जाऊ। चोटगर नाटक हएत।

भीड़सँ निकलि कऽ आएल दोसर महिला कलाकार: चल रे चल। एकरा सभक मैथिली नाटक हेबऽ दही। नाटक देखलासँ भोजन चलतौ रौ।

सूत्रधार: नै यै दाइ। भुखलेबला लेल ई नाटक छै। पेटक भूख, मोनक भूख आ बोलीक भूख।

महिला कलाकार: से छै। तखन आबै जाइ जो।

सूत्रधार: आबै जाउ, आबै जाउ। आइ हएत बच्चा, किशोर, युवा, प्रौढ़ आ बूढ़क लेल नाटक। स्त्री-पुरुषक लेल नाटक। चिड़ै-चुनमुनी लेल नाटक, गाछ-बृच्छ लेल नाटक, हबा-बसात लेल

नाटक। सूर्य-चन्द्र-तरेगण लेल नाटक। मूर्त-अमूर्त लेल नाटक। देश लेल नाटक। निन्न आ सपना लेल नाटक।

(महिला सूत्रधार बिच्चहिमे आबि जाइ छथि। भीड़सँ आएल वएह महिला कलाकार महिला सूत्रधार बनि सकै छथि।)

महिला सूत्रधार: हे। सोझे कहू ने जे ककरा लेल ई नाटक नै छै। एना पैघ-पैघ गप किए दऽ रहल छी।

सूत्रधार: कोनो नाम छुटि गेलै की ?

महिला सूत्रधार: यएह लिअ। सेहो हमहीं कहू। आब ताम-झाम शुरू करू आ देखाउ जे की विस्तार लेने अछि ई नाटक।

सूत्रधार: बेस तँ शुरू करू।

(कलाकार सभ एक दोसरामे मिज्झड़ भऽ एक-एकटा फराक पाँती बनबैत छथि। छोट, किशोर, युवा आ बूढ़क पाँती। स्त्री-पुरुषक पाँती। चिड़ै-चुनमुनी जेकाँ छोट बौआ आ छोट बुच्ची बजैत अछि। किशोर सभ हाथमे गाछ-बृच्छक हबा-बसातमे हिलैत पातक फोटो लऽ लैत छथि। युवा पुरुष सूर्य-तरेगणक फोटो आ युवा स्त्री-चन्द्रक फोटो लेने अबैत अछि लेने अछि तँ बूढ़ आ बूढ़ी भूत-प्रेत, भगवान आ स्वप्नक फोटो हाथमे लऽ लैत छथि।)

१ छोट बौआ: हम ओम। हम चिड़ै। नै भगजोगनी।

२ छोट बुच्ची: हम आस्था। हम चुनमुनी। हा हा (हँसैत)। भगजोगनी।

३ किशोर बौआ: हम जयन्त। हम गाछ।

४ किशोर बुच्ची: हम अपाला। हम बृच्छ। हेँ हेँ (हँसैत)।

५ युवा: हम विजय। हम सूर्य तरेगण।

६ युवती: हम विजया। हम चन्द्र माने चन्दा। खी-खी (हँसैत)।
७ वृद्ध: (थड़थड़ाइत) हम नेकलाल। हम भूत-प्रेत-राकश...।
८ वृद्धा: हम रामवती। हम स्वप्न माने कल्पना। हम...हम...हम...।
(कल्पनाक भाव-भंगिमा तीन बेर करैत छथि।)
सूत्रधार: अहाँ सभक काज की ?
महिला सूत्रधार: अहाँ सभक काज की ?
(आब छोट बौआकेँ ओमकेँ- १ छोट बुच्ची- आस्थाकेँ- २ एना ८ धरि कहब।)

१ सँ ८ (संगे-संग): हम सभ कोनो काजकेँ ढंगसँ कऽ देब, कहि कऽ तँ देखू।

महिला सूत्रधार: चिड़ै-चुनमुनी, दुनू गोटे आउ आ भगजोगनी बनि जाउ।
(१ सँ ८ संगे-संग चिकड़ऽ लगैत अछि। तखने १ आ २ झोंझसँ निकलि कऽ बगलमे राखल झोरासँ भगजोगनीक फोटो आ दूटा लेजर लाइट लऽ अनै छथि आ शेष छह गोटे एकटा चद्दरिसँ दुनू गोटेकेँ अढ़ कऽ दै छथि।)

१ : (लेजर लाइट बड़बै छथि): कतऽ छी आस्थू।
२ : (चद्दरिसँ बहार भऽ लेजर लाइट बड़बैत) हमदेख लेलौं ई संकेत। हम ओतऽ छलौं झोँझमे।
१ आ २ (संगे संग बजैत): हँ भऽ गेल।
७ आ ८ (संगे बजैत): की भऽ गेल?
१: देखलौं नै जे कोना प्रकाशसँ हमसभ एक दोसराकेँ ताकि

लेलौं।

७: ई तँ जखन हम मनुक्ख रही, माने मुइलाक पहिने, तखन खूब प्रयोग करैत रही। की यै रामवती।

८: करैत तँ रही, मुदा प्रकाश संग कतेक गर्मी आबि जाइ छलै। गुमारसँ जान चलि जाइ छल।

७: हे, प्रकाश हेतै तँ गर्मी तँ बहार हेबे करतै।

८: नेकलालजी। सोलह आना ऊर्जामे सँ पन्द्रह आना गर्मी आ एक आना मात्र प्रकाश आनै छलौं अहाँ। बड़का वैज्ञानिक बनै छलौं। प्रकाश तँ आबै छल मुदा गुमारसँ जान चलि जाइ छल।

७: अहाँ तँ छीहे कल्पना। मुइलाक बाद तैं ने बनि गेलौं कल्पना।

८: आ तैं ने अहाँ बनि गेलौं भूऽऽऽऽऽत, प्रेऽऽऽऽऽत, राकश।

७: (कने तमसाइत) हे तँ अहीं कहू जे प्रकाश बिन गर्मीक भेट सकैए। (लोकसभ दिस हाथ पसारि कऽ तकैत अछि)

५: (सोझाँ अबैत): नै, ई सम्भव नै अछि।

६: ई सम्भव अछि विजय।

५: आबि गेली विजया!!! (आश्चर्यसँ हाथ पसारैत अछि।) हिनकासँ कने पूछू जे हिनका लग अपन प्रकाश छन्हि की?

८: नै छन्हि मुदा तैयो रातिमे जे हिनकासँ इजोरिया छिटकैए से ठंढा तँ लगिते अछि।

७: हा!!! कल्पना!!! अपने फुरेने बजैत जाउ... बजैत जाउ... !!!

८: अहाँ जँ जिबैतेमे हमर गप सुइतौं, कल्पना करितौं तँ बना सकितौं बिन गुमारबला प्रकाश। ठंढ़ा प्रकाश।

७: सुनऽ हौ ओम-आस्था, बिन गुमारबला प्रकाश !! (आश्चर्य प्रकट करैत हाथ पसारैत अछि।) आब तोँहीं सभ बताबह जे बिन गुमारबला प्रकाश सम्भव नै छै।

१ आ २ : (आशचर्यसँ हाथ पसारैत) प्रकाशसँ गर्मी निकलतै तँ भगजोगनी तँ मरिये जेतै।

८: तखन तों सभ कोना जीवित छह।

१: माने?

२: प्रकाश तँ ठंढ़ा होइ छै।

१: हमर पुछरीसँ बहराइए प्रकाश, शीतल प्रकाश।

२: करैए मोन ठंढ़ा। दैए संकेत आ ताकि लै छी हम सभ एक-दोसराकँ।

८: ओह, हम तकैत रहि गेलौं रातिमे दूर देशक चन्द्रमा आ करैत रहि गेलौं कल्पना। मुदा अहाँ नेकलाल, किए नै देख सकलौं रातिमे घुमैत भग जोगनी सभकँ।

७: असफल वैज्ञानिक छी हम। राकश बनि घुमै छी, प्रकाशक ऊर्जासँ जड़ै छी। कल्पने, हम नै कऽ सकलौं कल्पना, नै तँ बनि जइतौं भगजोगनी।

८. जे पूरा कऽ दैतौं अहाँ हमर ओ कल्पना तँ हमहूँ बनि जइतौं भगजोगनी, । नै कटितै एतेक रास गाछ-बृच्छ, बोन देखू कतेक दूर भेल देखाइए (दूर बाध दिस आंगुर देखबैत अछि।)

३ आ ४ (समवेत स्वरमे) असगर भऽ गेल छी हम सभ। सूर्य तरेगन चन्द्रमा सन असगर।

(ऐ दुनूकँ छोड़ि कऽ सभ कलाकार भीड़मे मिज्झर भऽ जाइ छथि।)

४: असगरे रहि गेल छी हम सभ। किछु दिनमे खतम भऽ जाइ जाएब।

३: लगैए सएह। बनि जाएब भूत, प्रेत, राकश।

(तखने भूत-प्रेत बनल वृद्ध अबैए।)

७: से किए, अहाँ सभक ई स्थिति कोना भेल।

३: अहाँ द्वारे।

४: अहीं दुआरे।

७: आब हम की कऽ देलौं।

३: कागच बनबैले हमरा काटलौं।

४: मकान बनबैले हमरा काटलौं।

७: मुदा से तँ जरूरी छल। से तँ करैए पड़ितै किने।

३: तँ हमरा रोपलौं किए नै। कल्पना किए नै केलौं।

(तखने वृद्धाक प्रवेश होइए।)

८: कहू। कल्पना किए नै केलौं?

७: कोन कल्पना।

८: कल्पना जे कतेक काटी आ तकर कतेक गुना रोपी।

७: मुदा हम तँ रोपलौं।

३: अहाँ रोपलौं यूकेलिप्टस।

४: अहाँ रोपलौं विदेशी गाछ।

३: खून..नै नै..पानि पीब गेल सभटा ऐ जमीनक।

७: हे सभटा हमरे दोख नै दै जाउ। की अहाँ सभ ऊर्जा नै खर्च करै छी? हम वैज्ञानिक छी। सभटा बुझल अइ हमरा।

(३ आ ४ समवेत स्वरमे गीत गाबै छथि।)

ऑक्सीजन जरा भोजन बनबै छी
काज मोताबिक सेहो जरबै छी
जाड़क मासमे गरम रहै छी

नै होइ छै सगरो गरमी तँए
(नाचऽ लगै जाइए।)
७: बुझल अछि हमरा ई सभ। मुदा गर्मी कम्मे सही आनै तँ छी।
३: मुदा सेहो अहीं सभ लेल।
७: हमरा सभ लेल। कोना..कोना?
४: जाड़मे फूल तोड़ैकाल हाथ नै ठिठुरए अहाँ सभक तँ कमलक फूलकेँ गरम राखै छी।
७: हे तँ कियो अहाँकेँ काटैए तँ अपन सुरक्षा अपने किए नै करै छी।
८: कल्पना..सोचू सोचू।
३: करै छी।
४: जतेक सक बनि पड़ैए, ततेक करै छी।
(३ आ ४ समवेत स्वरमे गीत गाबै छथि।)
काँट देखा कऽ दूर भगाबी
फल खुआ कऽ भूख भगाबी
फूल तोड़ि कऽ, लऽ जाउ
देवता पितरपर अहाँ चढ़ाउ
(नाचऽ लगै जाइए।)
३: फल-फूलक लालचो दै छिऐ।
४:काँट देखा कऽ डराबितो छिऐ
३: मुदा तैयो नै मानै जाइए।
८: कल्पना..सोचू, सोचू।
७: (वृद्धा रामवती दिस तकैत।) हे कल्पने। हमरा जे अहाँ कहै छलौं जे कतेक काटी, तकर कतेक गुना रोपी, से हिनको सभकेँ कहियौन्ह ने।

८: हिनकर सभक पएर तँ माटिमे रोपल छन्हि, ई सभ कोना कऽ से करताह।

७: (मुँह दुसैत) कल्पना..सोचू..सोचू।

(३ आ ४ समवेत गाबऽ लगैए आ वृद्धक मुँह गीत सुनबाक क्रममे झूस हेबऽ लगै छै; मुदा गीत सुनैत-सुनैत वृद्धा मुदित भऽ जाइए।)

बीया फँसैए महीसक केसमे
लऽ जाइए ओ दूरदेशमे
झाड़ैए देह पहुँचाबैए ओतए
रोपने पएर, चलि जाइ ओतए!!!!

(बिन हिलने दुनू गोटे हाथसँ दूर इशारा करैत अछि।)

३: बीयामे तेना कऽ नोकसी सन फाँस बनबै छिऐ जे ओ मालक देहमे बाझि कऽ दूर चलि जाए ।

४: आ दूर जा कऽ बीया ओतऽ नव गाछ जनमाबए।

३: पराग लऽ कऽ टिकली दूर जाइए।

४: दोसर गाछकेँ ओइ परागसँ पुष्ट करैए..दूर देशमे।

८: कल्पना..ऽऽऽऽऽ।

(वृद्ध माथपर हाथ धऽ बैस जाइए, मुदा वृद्धा सेहो ओकर बगलमे बैस जाइए, आकाश दिस चिन्तित भऽ तकैत।)

४: जयन्त आब लगैए हमसभ खतम भऽ जाएब। जइ देशक वैज्ञानिक कल्पना नै करैत होथि ओतऽ की हएत? (हाथ घुमा कऽ पुछै छथि।)

३: अपाले। ओतऽ भविष्यक गाछ-बृच्छ विहीन कल्पना सत्य भऽ जाइए।

४: जेना एतऽ भेल अछि।
(३ आ ४ कानि कऽ गाबैए।)
जड़ि कटने भऽ जाएब छू
फूल पात सभ, लऽ लू
मरि गेल सभटा बुतरू
(दुनू खोंखी करऽ लगैए।)

(१ सँ ८ सभ बैसि जाइए आ गाबैए।)
जड़ि कटने भऽ जाएब छू।

जड़ि कटने भऽ जाएब छू
फूल पात सभ, लऽ लू
मरि गेल सभटा बुतरू
(सभ खोंखी करऽ लगैए।)

कमलाक भगता

(बाल नाटक)

सूत्रधार: आइ एकटा संस्कृत साहित्यक प्रसिद्ध कथापर आधारित नाटक देखा रहल छी। चोटगर कथा अछि। बच्चा आ पैघ सभक लेल। देखू ई भिखमंगा कतऽ सँ आबि रहल अछि।

दृश्य १

(गाममे घुमैत)

भिखमंगा: गरीबकेँ किछु दिअ। पुरान कपड़ा, रुपैआ, पैसा। किछुओ दिअ।

बूढ़ी: लिअ ई कपड़ा। पुरान छै मुदा जाड़मे बड्ड गरम रहै छै। ई अन्न सेहो।

नबका कमौआ: लिअ ई पैसा। किछु कीनि लेब।

(भिखमंगा सूत्रधारक बगलसँ होइत कपड़ाक धोधरिमे अन्न रखैत अछि। पाइ गनैत अछि। फेर दोसर दिस अपन घरक खाटपर बैसैत अछि। एकटा चुकड़ीमे पाइ रखैत अछि, फेर गनैत अछि।)

भिखमंगा: (मोने-मोन) आब तँ ढेर रास पाइ भऽ गेल। मोन अछि जे कमलाक भगता बनि जनकपुर जाइ। भगवान से दिन देखेलन्हि।

दृश्य २

भिखमंगा: (बोगलीमे पाइक चुकड़ी लेने आगाँ जाइत- भोरुका समए)

चलू चलू यौ
जनकपुरमे कमलाक भगता
करू करू यै
कमला माइ करू हमर उद्धार
चलू चलू यौ जनकपुर
भगता बनि कमलाक

(सोझाँ बालुसँभरल कमलाक तट। भिखमंगा सोचैत अछि।)
-अहा। की विस्तार अछि कमलाक। मुदा एतेक भोरमे कियो एतए नहि अछि। चलू पाइक चुकड़ी कातमे राखि डूम दऽ आबी।
(पाइक चुकड़ी नीचाँ रखैत अछि आ नहाइ लेल बिदा होइत अछि।)
(मोने-मोन सोचैत)- मुदा कियो जे देखि जाएत आ ई पाइ लऽ लेत तखन? एकरा बालुमे नुका दैत छिऐक।
(बालु कोड़ि कऽ चुकड़ी नुकबैत अछि।)
(फेर मोने-मोन सोचैत) मुदा जे कियो ई देखि जाएत तखन? मुदा देखत कोना आब। तेना कऽ नुका देने छिऐक जे आब हमरो नै भेटत।

(फेर सोचैत घुरि अबैत अछि।)
मुदा हम जे नहा कऽ आएब तँ कतऽ ई पाइ गाड़ल अछि से हमरो कोना बूझऽ मे आएत। ठीक छै।
(कोड़लाहा स्थानपर अबैत अछि।)

एतऽ शिवलिंग बना दै छिऐ। (कोड़लाहा स्थलपर पएर रखैत अछि आ पएरक चारू कात बालु राखए लगैत अछि। चारू कातसँ बालु भरि गेलाक बाद आस्तेसँ पएर हटा लैत अछि आ नीक-नहाँति शिवलिंग बना दैत अछि। फेर निश्चिन्त मोनसँ कमला-स्नानक लेल बिदा भऽ जाइत अछि। एम्हर ओ धार दिस बिदा होइत छथि आ ओम्हर दूरसँ किछु आर स्नानार्थी, पुरुष हाथमे धोती आ महिला हाथमे नुआ लेने, अबैत दृष्टिगोचर होइत छथि।)

(मोने-मोन सोचैत) नीके भेल जे फुरा गेल। कएक सालक कमाइक छी ई पैसा। ई लोक सभ आब स्नान करबा लेल आबि रहल अछि। ने जानि ककर मोनमे खोट हेतै आ ककर मोनमे नै।

(नहाइ लेल मंचसँ नीचाँ धारमे फाँगि जाइत अछि।)

पुरुष स्नानार्थी - (अपन कपड़ा लत्ता राखै अए) चली कमलामे डूम दऽ आबी।

स्त्री स्नानार्थी- (भिखमंगा द्वारा बनाओल शिवलिंग दिस इशारा करैत) हे देखियौ ओ शिवलिंग। लागैए एतऽ स्नान करबाक पहिने शिवलिंग बनेबाक विधान छै।

पुरुष स्नानार्थी- अपना सभ दिस, गंगा कातमे तँ एहेन कोनो परम्परा नै छै।

स्त्री स्नानार्थी- एत्तऽ मुदा छै। आ भोलाबाबाक स्थापना कऽ डूम लै मे हर्जे की।

पुरुष स्नानार्थी- हँ से तँ ठीके।

(दुनू गोटे एक-एकटा शिवलिंगक स्थापनामे लागि जाइत छथि। पएरक चारूकात बालु चढ़बऽ लगै छथि। तावत् आनो लोक सभ आबि कऽ किछु पूछऽ लगै छथि आ अच्छा-अच्छा कहि ओहो सभ

एक-एकटा शिव लिंगक स्थापनमे अपन-अपन पएरक चारू कात बालु चढ़बए लगै छथि। कनिये कालमे मंचपर शिवलिंगे-शिवलिंगे भरि जाइत अछि। मंचपर हर-हर महादेवक स्वरसँ अनघोल भऽ जाइए।)

भिखमंगा: (नहा कऽ निकलैत) देखू, जखन आएल रही तँ एकोटा लोक नहि छल आ आब देखू कतेक भीड़ भऽ गेल। हमरा की। जोगी छी, बहैत पानि सन। ई अंगवस्त्र रस्तेमे सुखा जाएत। जए माँ कमलेश्वरी। कमलाक भगता बनि चली आब जनकपुर। मुदा ओ चुकड़ी तँ लऽ ली।

(अपन बनाओल शिवलिंग ताकऽ लगैत अछि। मुदा चारू कात शिवलिंगे-शिवलिंग। एक दूटा शिवलिंगकेँ भखराबैत अछि मुदा ओहि नीचाँसँ किछु नहि बहराइत अछि।)

(भिखमंगा माथपर हाथ राखि मंचपर बैसि जाइत अछि आ आस्ते-आस्ते मंचपरसँ प्रकाश विलीन भऽ जाइत अछि।)

(पटाक्षेप)

जलोदीप

पात्र

चारिटा बच्चा। बच्चा मने बच्चा, बौआ आकि बुच्ची।
तीनटा लोक। लोक माने लोक, पुरुष आकि स्त्री।
भीड़। भीड़ माने भीड़, महिला वा पुरुख।

पूर्वदृश्य

(चारू कात जलामय। लोक सभ मंचपर थहाथही कऽ रहल छथि, पानि..बाढ़ि..आदि शब्दसँ चारूकात जलामय हेबाक अनुभव सभ कऽ रहल छथि। एकटा बच्चा कोहुना कऽ बाढ़िसँ बाहर निकलैत मंच दिस नीचाँसँ हाथ बढ़बैत अछि। लोक सभ ओकरा दिस दौगल अबैत अछि।

बच्चा: न। हम तँ ठीके छी। मुदा हम्मर...

(मंचपर अन्हार पसरि जाइत अछि।)

दृश्य १

(छहर दिससँ लोक सभ आबि रहल अछि। मंचक पाछाँक भागमे ऊँच स्थल बना कऽ ई प्रभाव उत्पन्न कएल जा सकैत अछि। अनघोल भेल अछि।)

पहिल लोक: हे बाइस फीट पानि आबि रहल अछि। घण्टा भरिमे

सभटा डूमि जाएत। चौकीपर चौकी गेटह। बड़का-बच्चाक छतपर बच्चा सभकँ दऽ आबह।

दोसर लोक: बाइस फीट तँ नै मुदा हिलकोरक अबाज अबैत सुनने आ देखने रहिऐ। झझा देलकै, छहरक ऊपरसँ पानि खसलै। झंझारपुर दिसुका बान्हपर जोर रहै। मुदा मारवाड़ी सभ झंझारपुर दिसुका पुबरिया बान्ह बचेबाक लेल सुनै छिऐ जे अप्पन सभक दिसुका पछबरिया बान्ह तोड़बा देलकै।

पहिल लोक: सुनै छिऐ से सत्य नहियो भऽ सकै छै। आ एतेक टा बान्ह कोना तोड़ल हेतै।

तेसर लोक: से की कहै छी। गोपलखाक सोझाँमे दू छह मात्र मारबाक देरी रहै।पानिक जोर तँ अहू दिस रहै। भने ओतइ टुटलै। अपना गामक सोझाँ जे टुटितै तँ गामे भँसि जइतै।

दोसर लोक: आब से बहस करबाक समए नै अछि। अपन-अपन होस धरै जाउ। पहिने बच्चा सभकँ बचाउ।

(अन्हार पसरि जाइए।)

दृश्य २

(चौकीपर चौकी गेटल अछि। ओइपर चारिटा बच्चा बैसल अछि। तीनटा बच्चा खेला रहल अछि, एक दोसराक हाथपर थोपड़ी पाड़ि रहल अछि मुदा चारिम बच्चा, जे नाटकक प्रारम्भमे आएल छल, गुमकी लाधने चौकीक एक कोनमे बैसल अछि। अचानके ओहो तीनू बच्चा खेल बन्न कऽ दैत अछि आ चारिम बच्चा दिस साकांक्ष होइत अछि।)

पहिल बच्चा: (चारिम बच्चासँ) एना किए मुँह बिधुऔने छँह। आ, खेलाइ छी सभ।

दोसर बच्चा: हइ, नै कहीं किछु। बेचारोक घरमे सभ बाढ़िमे दहा गेल छै।

तेसर बच्चा: मुदा घर तँ ठीके छै।

दोसर बच्चा: कोठाक घर छै, तँ नै टुटलै।

पहिल बच्चा: आब जे भेलै से भेलै, आबि जो। (ओ उठि कऽ जाइए आ ओकरा हाथ पकड़ि कऽ आनैए। पहिल, दोसर आ तेसर बच्चा ओकरा घेर कऽ बैस जाइए।)

पहिल, दोसर आ तेसर बच्चा (समवेत स्वरमे): दुख बिसरबा लेल खेल खेलेनाइ बड़ड जरूरी छै। आइ तोरे मोनसँ हेतै खेल। कह कोन खेल खेलाइ। जे भेलै से भगवानक लिखल।

चारिम बच्चा: नै, भगवानक लिखल नै। लोकक लिखल। हमर बाबू कहैत रहथि, सभटा छिऐ मनुक्खक खेल। खेलेमे ओ खेल जे हम खेलाए चाहै छी।

पहिल, दोसर आ तेसर बच्चा: हँ, से तँ ठीके। जे खेल खेलाए चाहमे से हम सभ खेलाएब।

चारिम बच्चा: ठीक छै, तँ खेल खेलाइ छी पहाड़क।

तेसर बच्चा: मुदा पहाड़ तँ ऐ इलाकामे छैहे नै।

चारिम बच्चा: कोना नै छै। ओ बान्ह सभ जे बान्हल छै से की छिऐ।